ARYAVART SHODH VIKASH PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 275-278
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-8, No.-II, Issues-IX YEAR- Dec-2017

आगरा नगर में निर्बल वर्ग के नशाखोरो के परिवारों की दशा एवं दिशा

सनातन सिंह ओझा
शोध अध्येता– समाजशास्त्र विभाग, नारायण कालेज, शिकोहाबाद, फिरोजाबाद (उ0प्र0) भारत

नशाखोरों के परिवारों की दशा एवं दिशा–पश्चिमी सभ्यता ने हमारे देश को किस तरह अपनी ओर आकर्षित किया, इससे सभी भलीभाँति परिचित हैं, इसकी ओर देश के युवा सबसे अधिक आकर्षित होते हैं, और अपनी भारतीय संस्कृति छोड़ पाश्चात्य संस्कृति के पीछे भागते हैं, नशाखोरी भी इसी का उदाहरण है, भारत देश की बड़ी मुख्य समस्याओं में से एक युवाओं में फैलती नशाखोरी भी है, देश की जनसंख्या आज 125 करोड़ के पार होती जा रही है, इस जनसंख्या का एक बड़ा भाग युवा वर्ग का है, नशा एक ऐसी समस्या है, जिससे नशा करने वाले के साथ–साथ, उसका परिवार भी बर्बाद हो जाता है, और अगर परिवार बर्बाद होगा तो समाज नहीं रहेगा तो देश भी बिखरता चला जायेगा, इन्सान को इस दलदल में एक कदम रखने की देरी होती है, जहाँ आपने एक कदम रखा फिर आप मजे क चलते इसके आदी हो जायेंगे और दलदल में धसते चले जायेगे, नशे के आदी इन्सान,चाहे तो भी इसे नहीं छोड़ पाता, क्योंकि उसे तलब पड़ जाती है, और फिर तलब ही उसे नशा की ओर और बढ़ाती है।

नाश–नाश है हर रोज नशा के सेवन से मरने वालें लोगों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है क्योंकि नशाखोर और परिवार के सदस्य भी कई तरह का नशा करने लगता है। जिसमें शराब, सिगरेट, अफीम, गाँजा, हेरोइन, कोकीन, चरस मुख्य है, नशा एक ऐसी आदत है, जो किसी इन्सान को पड़ जाये तो, उसे दीमक की तरह अन्दर से खोखला बना देती है, उसे शारीरिक, मानसिक व आर्थिक रूप से बर्बाद कर देती है, जहरीले और नशीले पदार्थ का सेवन इन्सान को बर्बादी की ओर ले जाता है, आजकल नशा के प्रभाव से निर्बल वर्ग के लोग भी प्रभावित हो रहे हैं, युवाओं के साथ–साथ बड़े बुजुर्ग भी इसकी गिरफ्त में है, लेकिन सबसे अधिक ये युवा नयी पीढ़ी को प्रभावित कर रहे हैं, युवा पीढ़ी के अन्दर सिर्फ निर्बल वर्ग के लोगों को किया गया है, नशा करने वाला व्यक्ति घर, देश, समाज के लिये बोझ बन जाता है, जिसे सब नीची दृष्टि से देखते हैं, नशा करने वाले व्यक्ति का न कोई भविष्य होता है, न वर्तमान, उसके अन्त में लोग दुखी नहीं होते हैं, देश में जो आज आतंकबाद, नक्सलवाद, बेरोजगारी की समस्या फैल रही है, इसका जिम्मेदार कुछ हद तक नशा भी है, नशा के चलते इन्सान अपना अच्छा बुरा नहीं समझ पाता और गलत राह में चलने लगता है। ऐसा अनेक समूहों में देखने को मिलता है।

नशाखोरी का समाज में फैलने का कारण (Nashakhori Reason)– शिक्षा की कमी– देश में शिक्षा की कमी की समस्या आज भी व्याप्त है, सरकार इसकी ओर कड़े कदम उठा रही है, शिक्षा का महत्व हमारे जीवन में बहुत है, लेकिन कई लोग इसे नहीं समझते हैं, और शिक्षा की कमी के चलते कई दुष्प्रभाव सामने आते हैं, जो लोग कम पढ़े लिखे होते हैं वे इसके दुष्प्रभाव को नहीं समझते हैं, और इसकी चपेट में आ जाते हैं, गाँव में कम पढ़े लिखे लोग कई तरह के नशा करते हैं, जिससे उनका परिवार तक नष्ट हो जाता है नशा सम्बन्धी पदार्थो की खुलेआम बिक्री–हम व हमारे देश की सरकार नशा के दुष्परिणामों को जानती है, लेकिन फिर भी इसकी बिक्री खुलेआम होती है, इसे देख देखकर भी लोग इसकी ओर आकर्षित होते हैं, संगति का असर– स्कूल के बच्चों में ये नशाखोरी संगति के चलते फैलती है, कम उम्र में ये बच्चे भटक जाते हैं, और ऐसे लोगों के साथ संगति करते हैं, जो नशा को अपना जीवन समझते हैं, बच्चों के अलावा युवा को भी कई बार संगति ही बिगाड़ती है, युवा पीढ़ी के कई ऐसे दोस्त होते हैं, जो नशा करते हैं और देखा–देखी में वे भी इसे करने लगते हैं जो लोग इस नशा को करते हैं, वे अपने साथ वालों को भी इसे करने के लिये प्रेरित करते हैं, मॉडर्न बनने के लिये–नशा को कुछ लोग आधुनिकता का माध्यम मानते हैं, उनका मानना होता है, नशा करने से लोग उन्हें एडवांस समझेंगे और उनकी वाह वाही होगी, नशा को अमीरों की शान भी माना जाता है, उन्हें लगता है, नशा करने से हमारा रुतवा सबको दिखेगा, जो व्यक्ति शिक्षित है, वो भी नशा से दूर नहीं है, उनका मानना है कि नशा करने से उनकी बुद्धि में विकास, याददाश और आन्तरिक शक्ति में विकास होता है, पाश्चात्य संस्कृति– पाश्चात्य सभ्यता में मादक पदार्थ को सामाजिक रूप से स्वीकारा गया है, जिससे यहाँ खुलेआम लोग इसे लेते हैं और इसकी खपत भी अधिक होती है, इसे देख–देख हमारे देश के युवा अपने आप को पाश्चात्य संस्कृति में ढालने के लिये नशा को अपनाते हैं, उनका मानना होता है, नशा उन्हें पाश्चात्य बनायेगा। सिनेमा का प्रभाव– हमारे सिनेमा जगत का नशाखोरी फैलाने में बहुत बड़ा हाथ है, टी.वी., फिल्मों में खुलेआम शराब, सिगरेट, गुटखा खाते हुये लोगों को दिखाया जाता हे, जिससे आम जनता विशेषकर बच्चे और युवा प्रभावित होते हैं, और उसे अपने जीवन में उतार लेते हैं, टी.वी. पर तो इसके बड़े–बड़े विज्ञापन भी आते हैं, जिस पर हमारे देश की सरकार भी कोई कदम

अनुरूपी लेखक

नहीं उठा रही है, युवा टी.वी. पर देखते हैं, कैसे किसी का दिल टूटने पर जब गर्लफ्रेंड से ब्रेकअप होने पर वो भी देवदास बन शराब पीने लगता है, तनाव, परेशानी–किसी तरह की पारिवारिक परेशानी, समस्या के कारण भी इन्सान नशा का आदी हो जाता है अपना गम को भुलाने के लिये इन्सान नशा करने लगता है, लेकिन इससे वो नशा के द्वारा दूसरी समस्या को बुलावा दे देता है, बेरोजगारी, गरीबी, कोई बीमारी या किसी पारिवारिक समस्या के चलते इन्सान नशा की ओर रूख करता है, मूड़ को बदलने के लिये भी लोग नशा करना पसन्द करते हैं, उनके हिसाब से नशा करने के बाद उन्हें अपने दुःख दर्द याद नहीं रहते और उन्हें सुख की अनुभूति होती है।

नशाखोरी के दुष्परिणाम– गरीबी बढ़ती है– आगरा नगर में कई ऐसे परिवार हैं जो एक वक्त की रोटी के लिये रोते हैं, उन्हें बिना खाना खाये सोना होता है, नशा का आदी इन्सान भले खाना न खाये, लेकिन उसके लिये नशा बहुत जरूरी होता है, वह अपनी दिन भर की कमाई नशा में गवाँ देता है, यहाँ तक नहीं सोचता, कि उसके बच्चे भूखे हैं, जो इन्सान पैसा नहीं कमाता, अपने घर के पैसों को इस नशे में लगा देता है जिससे घर के दूसरे लोगों के लिये समस्या खड़ी हो जाती है, रोज रोज के इस खर्चे से घर में गरीबी आने लगती है, जिससे घर में खाने पीने तक की समस्या हो जाती है नशा एक ऐसी समस्या है, जो दूसरी समस्या को न्योता देती है, इससे गरीबी आती है, बेरोजगारी, आतंकवाद फैलता है। देश में अपराधियों की संख्या बढ़ने लगती है। नशा वाला इन्सान घरेलू हिंसा बुलावा–नशा करने वाला इन्सान अपना आपा खो देता है, उसे याद नहीं होता है वो कहाँ है, क्या कर रहा है, नशा वाला इन्सान घरेलू हिंसा को दावत देता है, वह घर आने पर अपनी पत्नी एवं बच्चों को गाली–गलौज एवं मारपीट करने लगता है अपराधी बना देता है– नशा एक अपराध से कम नहीं है और नशा वाला इन्सान एक अपराधी, नशे की तलब को पूरा करने के लिये इन्सान चोरी करने लगता है, और छोटे–छोटे अपराध कब बड़े अपराध में बदल जाते हैं पता ही नहीं रहता और इस नशे के बाद इन्सान चोरी, मृत्यु, हिंसा , लड़ाई–झगड़े, बलात्कार जैसे कामों को अंजाम देता है, जो उसे एक बड़ा, अपराधी बना देता है, घर टूटते हैं भविष्य नष्ट होता है– नशेबाज को नशे के अलावा कुछ नहीं दिखाई देता है, मैंने ऐसे कई किस्से सुने हैं, जहाँ नशा ने अच्छे खासे बने बनाये इन्सान को बर्बाद कर देता है, नशा इन्सान का भविष्य नष्ट कर देता है। स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या–नशा की लगातार लत से शरीर नष्ट हो जाता है, तम्बाकू, शराब, सिगरेट अधिक पीने से शरीर में फेंफड़े, गुर्दा, दिल, और न जाने क्या–क्या खराब होने लगता है, हम सबको पता है, धूम्रपान हमारे स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है, फिर भी हम इसके आदी हो जाते हैं, धूम्रपान का धुँआ अगर सामने वाले व्यक्ति के शरीर में भी जाता है, तो उसे नुकसान पहुँचता है, इसी तरह गुटखा जिस पर लिखा भी होता है कि इसे खाने से स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या होती है फिर भी लोग मजे से इसे खाते हैं, मुँह का कैंसर, गले का कैंसर सब नशा के कारण होते हैं, नशा करने से व्यक्ति की उम्र घटती जाती है, और ये कई शोध के द्वारा प्रमाणित हो चुका है, अलग–अलग नशा पदार्थ अलग–अलग नुकसान देते हैं, शराब पीने से लीवर, पेट खराब होता है, और लीवर कैंसर भी होता है, गुटखा खाने से मुँह में कैंसर, अल्सर की परेशानी होती हे, गाँजा, भाँग से इन्सान का दिमाग खराब होने लगता है, इससे वो पागल भी हो सकता है, परिवार टूट जाते हैं– नशेबाज इन्सान अपने परिवार से ज्यादा अपने नशे को तवज्जो देते हैं, जिससे परिवार टूट जाता है, नशाखोरी, आज के समय में परिवार बिखरने की सबसे बड़ी बजह है, नशे के चलते पति पत्नी में झगड़े बढ़ते हैं, जिसका असर बच्चों पर भी होता है, कई बार तो ये बच्चे बड़े होकर अपने बड़ों की तरह ही काम करते हैं और नशा को अपना लेते हैं।

मादक पदार्थ का सेवन इन्सान को घट से घटक बना देता है, वो अपनी तलब को पूरा करने के लिये किसी भी हद तक जा सकता है, हमारे देश की सरकार देश की इस बड़ी समस्या की ओर उतनी नजर नहीं की हुई है, जितनी उसे करना चाहिए, सरकार को नशामुक्ति के लिये कड़े कदम उठाने चाहिए।

सरकार को खुलेआम मादक पदार्थ का सेवन पूरी तरह से बन्द कर देना चाहिए, सिनेमा, टी.वी. में इसके प्रयोग को वर्जित करना चाहिए, नशाखोरी की समस्या के बारे में लोगों को बताने के लिये कैम्पेन, सभा आयोजित करनी चाहिए, गाँव, शहर सभी जगह लोगों को इस समस्या के बारे में खुलकर बताना चाहिए, नशाखोरी सिर्फ भारत देश की ही नहीं, पूरे विश्व की समस्या है तो इससे निपटने के लिये, सभी देशों को इकट्ठे होकर काम करना चाहिए नशामुक्ति केन्द्र, परामर्श कार्यालय अधिक से अधिक खोले जाएँ। तथा नई पीढ़ीधनिर्बल वर्ग को नशाखोरी से बचायें।

समाज में बढ़ती नशाखोरी की प्रवृत्ति के अनेक घातक परिणाम सामने आ रहे हैं। इससे समाज में अनुशासनहीनता बढ़ रही है, शहर व गाँव की न्याय व्यवस्था चरमरा रही है तथा परिवार उजड़ रहे हैं। नशाखोरी के कारण लोगों की मानसिक, शारीरिक तथा आर्थिक हालत बिगड़ रही है। नई पीढ़ी निर्बल वर्ग में भी नशाखोरी की प्रवृत्ति बढ़ रही है। यदि समय रहते इस प्रवाह को नहीं रोका गया तो इसके घातक परिणाम होंगे। व्यक्ति चाहे अमीर हो या गरीब, युवा हो या वृद्ध, महिला हो या पुरुष कोई भी वर्ग इस रोग से अछूता नहीं है। आज हमें घर हो या दफ्तर, स्कूल हो या कॉलेज, गाँव हो या 'शहर सभी स्थान पर नशाखोर व्यक्ति या व्यक्तियों की जमात दिखाई देती है। नशाखोरी केवल एक रोग नहीं बल्कि यह अनेक रोगों

की जननी भी है, इसी प्रवृत्ति के चलते मनुष्य का मानसिक, शारीरिक एवं आर्थिक पतन तेजी से हो रहा है। सामाजिक मर्यादायें भंग हो रही हैं। नैतिक मूल्यों का तेजी से ह्रास हो रहा है। समाज में बढ़ रही आपराधिक प्रवृत्ति के लिये सबसे ज्यादा जिम्मेदार किसी को माना जा सकता है तो वह नशाखोरी ही है। 'शराब के नशे में चूर व्यक्ति असामान्य हालात में क्या हरकते नहीं करता। आये दिनों नशाखोरों के नित्य नये तरीके देखने सुनने व पढ़ने को मिलते हैं। नशाखोरी से न केवल अपराध बढ़ रहे हैं बल्कि इससे दुर्घटनाएँ भी तेजी से बढ़ रही हैं।

आधे से अधिक सड़क दुर्घटनाओं के लिये नशाखोरी को ही जिम्मेदार माना गया है। कभी यात्री बस पलट जाती है, तो कभी बारातियों से भरा वाहन दुर्घटना ग्रस्त हो जाता है। अनेकों लोग इसकी वजह से अकाल मृत्यु के शिकार हो रहे हैं अथवा निःशक्त हो रहे हैं। 'शराब पीना केवल मजबूरी नहीं बल्कि यह ऐश्वर्य प्रदर्शन का एक माध्यम बन गया है। अनेक लोग इसे विलासिता की वस्तु मान कर इस्तेमाल करते हैं। अपनी तथा कथित प्रतिष्ठा में चार चाँद लगाने के लिये मँहगी से मँहगी शराब पीना आज फैशन हो गया है।

यह समझ से परे है कि खुद तमाशबीन बनकर कोई कैसे अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाता होगा। तीज त्यौहार हो या मांगलिक कार्य पीने वालों को तो केवल बहाना ही चाहिए। आज के युग में महफिल सजे बिना कोई जश्न सम्भव ही नहीं है। नशा खोरी के कारण धार्मिक सामाजिक या राजनैतिक आयोजनों का निर्विघ्न सम्पन्न हो जाना किसी आश्चर्य से कम नहीं नशाखोरी व्यक्ति सब कुछ खोता जा रहा है। नशे के लिये वह घर परिवार एवं जमींन जायदाद बरबाद कर देता है। इन तथा कथित नशाखोरों के व्यसन के कारण समाज में अनैतिकता एवं अनुशासनहीनता बढ़ रही है। सामाजिक व्यवस्थायें चकनाचूर हो रही हैं। आपस के रिश्ते कमजोर होते जा रहे हैं एवं परिवार उजड़ रहा है। मेहनत कश लोग पी–पी कर सूख रहे हैं और शराब के निर्माता व वितरक हरे हो रहे हैं। चंद लोगों के जीवन की हरियाली के लिये समूचे समाज को बंजर बनाया जा रहा है।

हमें यह भी सोचना होगा कि लाखें–करोड़ों जिन्दगियों को तबाह करने का लाइसेंस क्या मुट्ठीभर लोगों को दे दिया जायें। देश में भौतिक विकास के नाम पर प्रतिवर्ष अरबों रूपये खर्च हो रहें लेकिन यह विकास किसके लिये ? भौतिक विकास के साथ नैतिक विकास भी जरूरी है। देश में मौजूद मानव संसाधन कितना स्वस्थ, पुष्टि एवं मर्यादित है हमें यह देखना होगा। मानव संसाधन के समुचित दोहन से ही राष्ट्र विकसित हो सकता। देश में मौजूद मानव संसाधन को रचनात्मक विकास की दिशा में लगाना होगा। कोई देश या समाज अपने मानव संसाधन को निरीह, निःशक्त या निर्बल बनाकर खुद कैसे शक्तिशाली हो सकता ?

यह नशाखोरी का ही दुष्परिणाम हो सकता है? कि मानव कमजोर, आलसी व लापरवाह होता जा रहा है। हमें नशाखोरी की बढ़ती प्रवृत्ति को रोकना होगा। लोगों के हाथों में दारू की बोतल नहीं बल्कि काम करने वाले औजार होने चाहिए। कौन देगा उन्हें ऐसी प्रेरणा ? इस बुरी लत को सरकार के किसी कानून से खत्म नहीं किया जा सकता। इसके लिये समाज में जागरूकता लानी होगी। नई पीढ़ी के निर्बल वर्ग को इस मद्यपान के दुष्परिणामों को बोध कराना होगा। समाजसेवियों एवं समाज के कर्णधारों को बिना वक्त गवायें अब इस दिशा में आगे बढ़ने की जरूरत है तभी नशाखोरों के परिवारों के परिवार की दशा एवं दिशा में हमें शान्ति, सद्भाव व भाईचारे का वातावरण निर्मित कर स्वस्थ समाज का निर्माण करना है। नशाखोरी के खिलाफ "नशा है खराब का सन्देश चारों ओर गूँज रहा है। इसके सकारात्मक परिणाम भी सामने आ रहे हैं। क्षेत्रों में एक नई चेतना का संचार हुआ है मन चाहे खुश हो या दुःखी कुछ कहता जरूर है, दुःख बाँटने से कम होता है और सुख बाँटने से बढ़ता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मित्रा के0: 1955 ड्रग ऐडिक्शन इन इण्डिया, सोसल वैलफेयर इन इण्डिया।
2. मिलर जे0सी0: 1960 ड्रग्स एण्ड बिहेवियर इन इण्डियन कॉनटेक्स्ट, जॉन विल्ले एण्ड सन्स इंक0, न्यूयार्क।
3. यंग जोकः 1971 दि ड्रग टेकर्सः दि सोसाल मीनिंग ऑफ ड्रग यूज मैकगिब्बोन एण्ड की पब्लिशर्स (प्रा0लि0), लन्दन।
4. सत्यार्थी पी0: 1947 नशीले पदार्थो का सेवन तथा युवा पीढ़ी, प्रकाशित शोध–पात्र, राष्ट्री शोध संगोष्ठी, डीम्ड वि0वि0, दयालबाग आगरा, उ0प्र0, 22–23 फरवरी, 97 (सौजन्य सहयोग–विश्वविद्यालय अनुदान आयोग), दिल्ली।
5. स्टारलिंग पी0के0: 1992 ऐक्शन ऑफ ल्कोहल ऑन मैन, विवेक प्रकाशन जवाहर लाल नगर, दिल्ली।
6. खान एम0जेड0: 1985 ड्रग यूज्ड अमोन्गस्ट दी कॉलेज गैरिथ यूबीएस पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
7. बघेल डी एसः 1970 अपराधशास्त्र, सरस्वती सदन, दिल्ली।
8. मोदी आई0पी0: 1997 ड्रग एडिक्शन एण्ड प्रीवेन्शन, रावल पब्लिकेशन, जयपुर।
9. रश्मि अग्रवालः 1989 ड्रग एयूजः सोसिओ–साइकोलोजीकल परस्पेक्टिव्स एण्ड इण्टरवेन्षन स्ट्रेटजीज, डी0के0

पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

10. सैन भीमः 1989 अल्कोहल एडिक्शनः ए स्टडी इन नेचर एण्ड डाइमेन्शन्स ऑफ ड्रिन्किंग एण्ड प्रोहिबिटेशन, दीप एण्ड दीप पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
11. त्रिभुवन कपूरः 1993 ड्रग एपीडेमिक अमोंग इण्डियन यूथ ए स्टडी ऑफ ड्रग एडिक्शन, पीएच पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन, नई दिल्ली।
12. ड्रग एब्यूजः 1983 अमोन्ग कॉलेज इन दी ट्विन सिटीज ऑफ हैदराबाद एण्ड सिकन्द्राबाद, सोशल डिफैन्स, वाल्यूम 18, दन 72, अप्रैल 1983.
13. ड्रग एब्यूज इन इण्डियाः 1981 प्रीविलेन्स पैटर्न पॉलिसी एण्ड प्रीवेन्शन, एच के शर्मा डी0 मोहन, सोशल डिफेन्स, वाल्यूम 16 नं0 63, जनवरी 1981.
14. रिपोर्ट ऑफ दी नेशनलः 1977 कमेटी ऑन ड्रग डिक्शन, मिनिसट्री ऑफ हैल्थ एण्ड फैमिली वेलफेअर, गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया।

*****